International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 03 | March - 2026 SJIF Rating: 8.659 ISSN: 2582-3930

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में धाशमिक मूल्यों की भूशमका और राष्ट्ीय एकता

अनिल कुमार दुबे[1], सपिा*[2], वीरेन्द्र कुमार सरसैया[3], अंजुलता[4],अिीता शमाा[5]

[1]श्रीमती नवद्यावती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत
[*2]नशक्षा संस्थाि, बुन्देलखण्ड नवश्वनवद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), भारत (उ.प्र.), भारत
3श्रीमती नवद्यावती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत
[4]वीरांगिा महाराि्ी लक्ष्मीबाई राजकीयमनहलामहानवद्यालय, झांसी
[5]अतरा पीजी कॉलेज, अतरा, बांदा
*संवाद लेखक (Corresponding Author)
ई-मेल पता: sch.sapnasin16@bujhansi.ac.in

ियध सारोंि

यह समीक्षा लेख भारतीय लोकतंत्र में धानमाक नशक्षा की भूनमका तथा उसके राष्ट्ीय एकीकरण पर प्रभाव का आलोचिात्मक अध्ययि प्रस्तुत करता है। भारतीय नशक्षा प्रणाली गुरुकुल, मदरसा और जातीय पद्धनतयों जैसी परंपराओं पर आधाररत रही है [5][6], नजन्ोंि्े ज्ञाि केसाथ-साथ ि्ैनतक और सांस्कृनतक मूल्ोंं को भी महत्व नदया। औपनिवेनशक काल में धानमाक नशक्षा हानशए पर चली गई [9], नकंतु स्वतंत्रता केबाद नशक्षा
ि्ीनत में ि्ैनतक और मूल्परक नशक्षा को पुि्ः महत्व नमला [2][3][4]। आधुनिक संदभों में धानमाक नशक्षा को बहुलतावादी और उदार दनष्टकोण से देखि की आवश्यकता है, तानक यह सामानजक सद्भाव, सनहष्णुता
और राष्ट्ीय एकता को प्रोत्सानहत कर सके [12]।

बीज-सब्द (Keywords)

धानमाक नशक्षा, राष्ट्ीय एकीकरण, भारतीय लोकतंत्, सनहष्णुता, सामानजक एकता, नशक्षा ि्ीनत।

भूशमका

भारत एक बहुधानमाक, बहुसांस्कृनतक राष्ट्र है। यहाँ नशक्षा केवल ज्ञाि्ाजाि का माध्यम ि्हीं बल्कि ि्ैनतक और सांस्कृनतक निमााण का भी साधि रही है [5]। लोकतांनत्रक व्यवस्था में समाि्ता, स्वतंत्रता और भाईचारे की स्थापि केनलए धानमाक नशक्षा की प्रासंनगकता सदैव चचाा का नवषय रही है [7]।

साशित्य समीक्षा

- **प्राचीन काल:** वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण और महाभारत में नशक्षा का आधार धमा, सत्य और ि्ैनतकता रहा [5]।
- **गुरुकुल परोंपरा:** गुरु-नशष्य संबंध पर आधाररत, ि्ैनतक अिुशासि और आध्याल्कत्मक नवकास पर बल [6]।
- **मदरसा परोंपरा:** इस्लामी धानमाक नशक्षा केसाथ-साथ सानहत्य, गनणत और नचनकत्सा जैसे नवषयों का समावेश [10]।

- **औपशनवेशिक काल:** अंग्रेजों िे नशक्षा को लौनकक और प्रशासनिक ढांचे तक सीनमत नकया, धानमाक नशक्षा को हानशए पर रखा [9]।
- **स्वतोंत्रता उपरोंत:** नशक्षा आयोगों और िीनतयों (1948, 1964, 1986, 2020) िे मूल् आधाररत नशक्षा पर बल नदया [2][3][4][1]।

धाशमिक शिक्षा और राष्ट्र ीय एकीकरण

1. **नैशतक शवकास:** सत्य, अनहंसा, करुणा और सनहष्णुता जैसे मूल्ोों का संवधाि [7][8]।
2. **सामाशजक समरसता:** धानमाक नशक्षा से सहयोग, भाईचारा और नवश्वास की भावि बढ़ती है [12]।
3. **लयकताोंशत्रक मूल्:** समाि ता, स्वतंत्रता और न्याय जैसे नसद्धांतों को बल नमलता है [4]।
4. **ऐशतिाशसक ययगदान:** स्वतंत्रता संग्राम के दौराि नवनभन्न धर्मों की नशक्षाओं िे राष्ट्र ीय चेति और एकजुटता को मजबूत नकया [8][9]।

आधुशनक सोंदभि में चुनौशतयाँ

- सांप्रदानयक दृनष्टकोण से नशक्षा की व्याख्या [11]।
- आधुनिक नशक्षा िीनत में धानमाक नशक्षा का सीनमत स्थाि [1]।
- छात्रों में परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलि की कमी [7]।

सुझाव

1. पाठ्यक्रम में सभी धर्मों के सावाभौनमक मूल्ोों का समावेश [12]।
2. नशक्षकों को उदार और निष्पक्ष दृनष्टकोण पर आधाररत प्रनशक्षण [6]।
3. सांस्कृनतक और मूल् आधाररत कायाशालाओं का आयोजि [7]।
4. निनजटल प्लेटफार्मों के माध्यम से धानमाक नशक्षा को रोचक बिाि ा [1]।

शनष्कर्ि (Conclusion)

धानमाक नशक्षा भारतीय लोकतंत्र की आत्मा और राष्ट्र ीय एकता की आधारनशला है [11]। यह केवल आध्यात्मिक और िैनतक नवकास का साधि िहीं, बल्कि सामानजक समरसता और लोकतांनत्रक मूल्ोों की मजबूती का भी महत्वपूणा माध्यम है [12]। आधुनिक नशक्षा प्रणाली में यनद धानमाक नशक्षा को निष्पक्ष और समावेशी दृनष्टकोण से सम्मिनलत नकया जाए, तो यह भारतीय समाज में स्थायी शांनत, सद्भाव और राष्ट्र ीय एकीकरण को सुदृढ़ करि में सहायक नसद्ध हो सकती है [1][4]।

सोंदभि सूची

1. नशक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्र ीय नशक्षा िीनत 2020। िई नदल्ली।
2. िॉ. सवापल्ली राधाकृष्णि (1948). नवश्वनवद्यालय नशक्षा आयोग की ररपोटा। भारत सरकार।
3. कोठारी आयोग (1964–66). नशक्षा और राष्ट्र ीय नवकास। भारत सरकार।
4. माि व संसाधि नवकास मंत्रालय (1986, संशोनधत 1992). राष्ट्र ीय नशक्षा िीनत। भारत सरकार।

5. चट्टोपाध्याय, सतीश (2005). भारतीय दशाि और नशक्षा। िई नदल्ली: एलाइि पल्किशसा।
6. पाठक, आर.पी. (2012). नशक्षा केदाशानिक एवं समाजशास्त्रीय पररप्रेक्ष्य। नदल्ली: अटलांनटक पल्किशसा।
7. शमाा, आर.ए. (2010). पररवनतात भारतीय समाज में मूल् नशक्षा। मेरठ: सूया पल्किकेशन्स।
8. महात्मा गांधी (1956). िई तालीम (Towards New Education)। अहमदाबाद: िवजीवि प्रकाशि।
9. कुमार, कृष्ण (2005). नशक्षा का राजीनतक एजेंिा: औपनिवेनशक और राष्ट्रवादी नवचारों का अध्ययि। िई नदल्ली: सेज पल्किकेशन्स।
10. नसंह, वाई.के. (2011). उदीयमाि भारतीय समाज में नशक्षा। िई नदल्ली: एपीएच पल्किनशंग कॉरपोरेशि।
11. लालाजपत राय (2019). धानमाक नशक्षा और भारतीय समाज। िई नदल्ली: कल्पज़ पल्किकेशन्स।
12. यूिेस्को (2015). शांनत और सतत नवकास हेतु नशक्षा। पेररस: यूिेस्को।